पैदावार:

- शुद्ध फसल के तौर पर, प्रति हेक्टेयर 18.6 क्विंटल उपज प्राप्त होती है जो सुखाने के बाद घटकर 1/3 रह जाती है।
- सूखी जड़ी–बूटी को ठंडे और शुष्क स्थानों पर भंडारण किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोटः कृषि प्राद्योगिकी का विकास वनस्पति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान द्वारा किया गया है।

शंखपुष्पी की खेती

सामान्य नाम	:	शंखपुष्पी
वानस्पतिक नाम	:	इवोल्वुलस एल्सिनॉइड्स
कुल	:	कोनवोलवुयेसी
उपयोगी भाग	:	पूरा पौधा
सामान्य उपयोग	:	पूरे पौधे को तंत्रिका दुर्बलता और स्मृति लोप में काढ़े के रूप में प्रयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

शंखपुष्पी

इवोल्वुलस एल्सिनॉइड्स
कुल–कोनवोलवुऐसी

यह विस्तारित शाखाओं वाला एक सालाना / सदाबहार पौधा है।

जलवायु और मिट्टी :

- शुष्क से लेकर नम मिट्टी बेहतर रहती है।

उगाने की सामग्री:

- बीजों का संग्रह अक्टूबर–नवंबर के दौरान किया जाता है।

नर्सरी विधि:

पौध तैयार करना :

- नर्सरी में उगाने के लिए जून–जुलाई के दौरान 0.5 सेमी गहरे गड्ढों में एक पॉलीबैग में दो बीजों की दर से बीजों की बुआई की जाती है।
- एक हेक्टेयर भूमि में रोपण के लिए 190 ग्राम बीजों की जरूरत होती है।

पौध दर और पूर्व उपचार :

- इसके बीजों की छाल कठोर होती है जिसे यांत्रिक रूप से उतारा जाता है जिससे 80% अंकुरण प्राप्त होता है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोग :

- भूमि को पांच बार जुताई करके अच्छी तरह से तैयार करें।
- प्रति हेक्टेयर 10 टन खाद का प्रयोग करें।

पौधारोपण और अनुकूलतम दूरी :

- पौधों को जुलाई के अंत–अगस्त में खेत की दशाओं के अनुसार 25 x 25 सेमी की दूरी पर रोपा जाता है।
- फल अगस्त के अंतिम सप्ताह में लगते हैं जबकि फूल आना जारी रहता है।

अंतर फसल प्रणाली:

- शंखपुष्पी को गुगल के साथ उगाया जा सकता है।
- इस पौधे को बाजरा, ग्वार फली, मूंग फली इत्यादि के साथ भी उगाया जा सकता है।

सिंचाई:

- शुष्क खेत दशाओं के अनुसार अधिकतम बढ़त और उपज प्राप्त करने के लिए पांच दिन सिंचाई का कार्यक्रम उपयुक्त पाया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण:

- पूरे फसल सीजन के दौरान 15–20 दिनों के अंतराल पर हाथ से निराई और गुड़ाई की जरूरत पड़ती है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई :

- यह वर्षा ऋतु की फसल है और अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए लगभग चार महीने का समय लेती है।
- जुलाई के महीने में रोपे गए पौधे सितंबर–अक्टूबर के दौरान पूरी बढ़त हासिल कर लेते हैं।
- यही इन पौधों की कटाई करने का उपयुक्त समय होता है।

कटाई पश्चात प्रबंधन:

- कटाई के बाद इसे उचित तरीके से सुखाने के बाद विपणन के लिए जूट के बोरों में रखकर भंडारण करना चाहिए।